IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, October 2025
Impact Factor: 7.67

मुद्राराक्षस का नाट्य-वैशिष्ट्य

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त-प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-संस्कृत,
शास. टी. आर. एस. महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
गणेश प्रसाद तिवारी
शोधार्थी, शास. टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश:-

'मुद्राराक्षस' संस्कृत के प्रसिद्ध नाट्यकार विशाखदत्त द्वारा रचित एक ऐतिहासिक नाटक है। यह गुप्तकालीन या उसके आस-पास के समय का नाटक माना जाता है। इसका विषय चाणक्य (कौटिल्य) द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध का सम्राट बनाने और नन्दवंश के अंत के बाद उसकी सत्ता को सुदृढ़ करने की राजनीतिक घटनाओं पर आधारित है। 'मुद्राराक्षस' का नाट्य-वैशिष्ट्य इस बात में है कि यह संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक नाटक है, जिसमें न श्रृंगार का बाहुल्य है, न दैवी चमत्कारों का सहारा, बल्कि ठोस ऐतिहासिक यथार्थ, सजीव चरित्र और तीव्र नाटकीयता इसकी आत्मा हैं।

'मुद्राराक्षस' संस्कृत साहित्य का एकमात्र शुद्ध राजनीतिक नाटक है। इसमें नायक-नायिका के प्रेम या श्रृंगार का कोई विशेष स्थान नहीं है। सम्पूर्ण कथा राजनीति, कूटनीति, षड्यंत्र, और बुद्धिचातुर्य पर केन्द्रित है।

शब्द बीज:- 'मुद्राराक्षस', नाट्य-वैशिष्ट्य. संस्कृत, सर्वश्रेष्ठ, राजनीतिक, कूटनीति, नाटक, ठोस ऐतिहासिक, यथार्थ, बुद्धिमान, निष्ठावान आदि।

प्रस्तावना

संस्कृत नाट्य परंपरा में 'मुद्राराक्षस' का विशेष स्थान है। यह नाटक विशाखदत्त द्वारा रचित है, जो संभवतः गुप्तकालीन युग (लगभग चौथी-पाँचवीं शताब्दी) के लेखक थे। इस नाटक का मूल विषय चाणक्य की कूटनीति, राजनीति और मौर्य साम्राज्य की स्थापना से जुड़ा हुआ है। 'मुद्राराक्षस'

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, October 2025 Impact Factor: 7.67

को संस्कृत का एकमात्र ऐसा राजनीतिक नाटक कहा जाता है, जिसमें प्रेम, करुणा या शृंगार की अपेक्षा नीति, चातुर्य और राजनीति का प्रधान स्वर है।

यह नाटक केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। 'मुद्राराक्षस' की कथा मौर्य साम्राज्य की स्थापना से जुड़ी है। चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश का विनाश कर नया साम्राज्य स्थापित किया, जिसमें चाणक्य उसकी प्रमुख शक्ति थे। राक्षस, जो नंदों का मंत्री था, अत्यंत बुद्धिमान, निष्ठावान और कूटनीतिज्ञ व्यक्ति था। चाणक्य की इच्छा थी कि राक्षस चंद्रगुप्त के राज्य में मंत्री बने ताकि शासन सुदृढ़ हो। परंतु राक्षस अपने स्वामी के प्रति निष्ठा के कारण यह स्वीकार नहीं करता। चाणक्य विभिन्न राजनीतिक चालों और रणनीतियों से अंततः राक्षस को मौर्य राज्य में सम्मिलित कर लेता है। यह नाटक चाणक्य की कूटनीति, राक्षस की निष्ठा और राजनीति के नैतिक द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्मता से प्रस्तुत करता है।

नाट्य-रचना की विशेषताएँ

'मुद्राराक्षस' की नाट्य-रचना अत्यंत सुसंगठित और प्रभावशाली है। इसकी प्रमुख नाट्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. विषय-वस्तु की मौलिकता

संस्कृत नाटकों में सामान्यतः प्रेम, देव-मानव कथाएँ या धार्मिक आख्यान मिलते हैं, परंतु 'मुद्राराक्षस' राजनीतिक विषय पर आधारित है। यह नाटक किसी पुराणिक कथा पर नहीं, बल्कि ऐतिहासिक प्रसंगों पर टिका है। इस दृष्टि से यह एक राजनीतिक नाटक के रूप में अद्वितीय है।

2. पात्र-चित्रण की जीवंतता

विशाखदत्त ने पात्रों का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी किया है।

चाणक्य – राजनीति के आदर्श प्रतीक, बुद्धिमत्ता और चतुराई के प्रतीक।

राक्षस – निष्ठा, आत्मसम्मान और कर्तव्यनिष्ठा के प्रतीक।

चंद्रगुप्त – युवा, साहसी और दूरदर्शी शासक।

पात्रों के संवाद और कर्म उनकी अंत:प्रेरणाओं को उजागर करते हैं। कोई पात्र पूर्ण खल या पूर्ण नायक नहीं है, यही इसकी यथार्थवादी विशेषता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, October 2025
Impact Factor: 7.67

3. भाषा और शैली

नाटक की भाषा संस्कृत की सुबोध, प्रभावशाली और नीति-प्रधान है। इसमें 'संवाद' प्रधानता रखते हैं — जो पात्रों की बुद्धि, कूटनीति और तर्कशक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

विशाखदत्त ने श्लोकों के माध्यम से नीति वचनों को बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है। उदाहरणस्वरूप, चाणक्य के संवादों में तीक्ष्णता और व्यंग्य दोनों का मेल है।

4. नाट्य-संरचना

'मुद्राराक्षस' में सात अंक हैं। प्रत्येक अंक कथा को आगे बढ़ाता है और चरमोत्कर्ष की ओर ले जाता है। संवाद, उपसंहार और घटनाओं का विकास अत्यंत संगठित रूप में हुआ है। इसमें कोई अनावश्यक प्रसंग या अतिनाटकीयता नहीं है।

5. नाट्यरस और भाव

यद्यपि यह नाटक राजनीतिक है, फिर भी इसमें वीर, बीभत्स और अद्भुत रसों का सुंदर समन्वय मिलता है।

चाणक्य के कार्यों में वीर रस।

नंद वंश के पतन और छल-प्रपंचों में बीभत्स रस।

राक्षस के अंतर्मन में चल रहे द्वंद्व में करुण और शांति रस की झलक।

इस प्रकार, नाटक बहु-रसात्मक बन जाता है।

नैतिक और सामाजिक दृष्टि से महत्व

'मुद्राराक्षस' केवल राजनीति का नाटक नहीं, बल्कि नैतिक प्रश्नों का भी नाट्य रूपांतरण है। इसमें दिखाया गया है कि राज्य-नीति में उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन चाहे जैसे हों, वह उचित ठहराए जा सकते हैं — यह चाणक्य का दृष्टिकोण है। दूसरी ओर राक्षस का चरित्र निष्ठा और धर्म का प्रतीक है। इस प्रकार नाटक में आदर्श और यथार्थ का संघर्ष दृष्टिगोचर होता है।

काव्यगत विशेषताएँ

संवादों में संक्षिप्तता और तीक्ष्णता है। उपमाओं का प्रयोग सीमित किन्तु सार्थक है। नीति, कूटनीति और राजनीति के सूक्ष्म सूत्र काव्य रूप में गूंथे गए हैं। भाषा में प्रखरता के साथ-साथ सौंदर्य भी निहित है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, October 2025
Impact Factor: 7.67

निष्कर्ष

'मुद्राराक्षस' न केवल संस्कृत नाट्य-साहित्य का उत्कृष्ट उदाहरण है, बल्कि भारतीय राजनीति और संस्कृति का भी जीवंत दर्पण है। इसमें लेखक ने नाट्य-कला के सभी अंगों का प्रभावी समन्वय किया है—कथा, पात्र, संवाद, रस और उद्देश्य।

यह नाटक आज भी समसामयिक है क्योंकि इसमें राजनीति के नैतिक प्रश्न, सत्ता के लिए संघर्ष, और बुद्धि की शक्ति की विजय का चित्रण मिलता है। इस प्रकार, 'मुद्राराक्षस' को भारतीय नाट्य-साहित्य का एक अद्वितीय राजनीतिक महाकाव्य कहा जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. विशाखदत्त – मुद्राराक्षस, संपादक: पं. शंकर गोस्वामी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी।
2. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी – संस्कृत नाट्य परंपरा।
3. डॉ. रामनाथ शर्मा – संस्कृत नाटकों का इतिहास।
4. भट्ट, विनोद – भारतीय राजनीति और साहित्य।
5. चतुर्वेदी, शिवप्रसाद – नाट्यशास्त्र और संस्कृत नाटक।